Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

झारखंड लोक सेवा आयोग (JPSC)

प्राचीन भारत

(झारखंड के विशेष संदर्भ सहित)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: JHPM01

झारखंड लोक सेवा आयोग (JPSC)

प्राचीन भारत

(झारखंड के विशेष संदर्भ सहित)

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 87501 87501, 011-47532596
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

JPSC DLP विषय सूची (Contents)

1.	**प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत**	**7–14**
1.1	पुरातात्त्विक स्रोत	9
1.2	साहित्यिक स्रोत	11
2.	**प्रागैतिहासिक काल**	**15–25**
2.1	पुरापाषाण काल	15
2.2	मध्य पाषाण काल	16
2.3	नवपाषाण काल : कृषि और पशुपालन	18
2.4	ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियाँ	20
2.5	प्रागैतिहासिक काल में झारखंड	23
2.6	झारखंड में ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति	24
3.	**सिंधु घाटी सभ्यता**	**26–39**
3.1	सैंधव सभ्यता का उद्‌भव	26
3.2	सैंधव सभ्यता का भौगोलिक विस्तार/सीमा	28
3.3	सैंधव सभ्यता की पुरातनता/प्राचीनता	28
3.4	सैंधव सभ्यता की रचनाकारिता/कर्तृत्व	29
3.5	सैंधव सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँ	30
3.6	हड़प्पा सभ्यता या सैंधव सभ्यता का पतन	36
4.	**आर्य**	**40–42**
4.1	आर्यों का मूल निवास स्थान	40

5. वैदिक सभ्यता **43–58**

5.1 ऋग्वैदिक काल : 1500-1000 ई.पू. 43

5.2 उत्तर-वैदिक काल : 1000-600 ई.पू. 50

5.3 झारखंड : उत्तर-वैदिक काल 56

6. लिच्छवि गणराज्य **59–60**

7. छठी शताब्दी ईसा पूर्व का काल (महाजनपद काल) **61–87**

7.1 धार्मिक आंदोलन: जैन धर्म व बौद्ध धर्म 61

7.2 झारखंड में बौद्ध धर्म 80

7.3 महाजनपद तथा मगध साम्राज्य का अभ्युदय 80

7.4 विदेशी आक्रमण 84

8. मौर्यकाल **88–113**

8.1 मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत 88

8.2 मौर्य साम्राज्य का विस्तार 89

8.3 चंद्रगुप्त मौर्य, बिंदुसार, अशोक 90

8.4 मौर्य साम्राज्य की प्रकृति 99

8.5 मौर्य प्रशासन 100

8.6 मौर्यकालीन समाज 104

8.7 मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था 105

8.8 मौर्यकालीन कला 106

8.9 पतन के कारण 108

8.10 मौर्यकाल में झारखंड 110

9. मौर्योत्तर काल **114–132**

9.1 देशी राजवंश 114

9.2 प्रमुख विदेशी राजवंश 120

9.3 मौर्योत्तरकालीन राजव्यवस्था एवं प्रशासन 126

9.4 मौर्योत्तरकालीन समाज 127

9.5 मौर्योत्तरकालीन अर्थव्यवस्था 128

9.6 मौर्योत्तरकालीन कला एवं साहित्य 129

9.7 मौर्योत्तर काल में झारखंड 130

10. गुप्त साम्राज्य **133–153**

10.1 गुप्त राजवंश के इतिहास के स्रोत 133

10.2 प्रारंभिक शासक 134

10.3 गुप्त साम्राज्य के अंतर्गत प्रशासन 139

10.4 गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था 142

10.5 गुप्तकालीन समाज एवं धार्मिक जीवन 143

10.6 गुप्तकालीन शिक्षा एवं साहित्य 145

10.7 गुप्तकालीन कला और स्थापत्य 147

10.8 स्वर्णयुग की अवधारणा 149

10.9 वाकाटक वंश 150

10.10 गुप्तकाल में झारखंड 151

11. गुप्तोत्तर काल **154–164**

11.1 प्रमुख राजवंश 154

11.2 थानेश्वर का पुष्यभूति (वर्धन) वंश 155

11.3 गुप्तोत्तरकालीन सामाजिक स्थिति 159

11.4 गुप्तोत्तरकालीन राजनीतिक व्यवस्था 160

11.5 गुप्तोत्तरकालीन अर्थव्यवस्था 160

11.6 गुप्तोत्तरकालीन धर्म 161

11.7 गुप्तोत्तर काल में झारखंड 162

12. संगम काल **165–170**

12.1 संगम साहित्य 165

12.2 संगमकालीन राजनीतिक इतिहास 166

12.3 संगमकालीन शासन व्यवस्था 167

12.4 सामाजिक स्थिति 168

12.5 संगमकालीन अर्थव्यवस्था 168

13. दक्षिण भारत **171–183**

13.1 चालुक्य वंश 171

13.2 पल्लव वंश 173

13.3 चोल राजवंश 177

14. पूर्व मध्यकालीन भारत **184–196**

14.1 पाल, गुर्जर-प्रतिहार एवं राष्ट्रकूट वंश 184

14.2 त्रिपक्षीय संघर्ष 187

14.3 भारत पर अरब आक्रमण 193

अध्याय
1

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत (Sources of Ancient Indian History)

इतिहासकार एक वैज्ञानिक की भाँति उपलब्ध सामग्री की समीक्षा करके अतीत का सही चित्रण करने का प्रयास करता है। उसके लिये साहित्यिक सामग्री, पुरातात्त्विक साक्ष्य और विदेशी यात्रियों के यात्रा-वृत्तांत सभी का महत्त्व है। प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिये पूर्णत: शुद्ध ऐतिहासिक सामग्री विदेशों की अपेक्षा अल्प मात्रा में उपलब्ध है। यद्यपि भारत में यूनान के हेरोडोटस या रोम के लिवी जैसे इतिहासकार नहीं हुए, अत: कुछ पाश्चात्य विद्वानों की यह मानसिक धारणा बन गई थी कि भारतीयों को इतिहास की समझ ही नहीं थी। लेकिन, ऐसी धारणा बनाना भारी भूल होगी। वस्तुत: प्राचीन भारतीय इतिहास की संकल्पना आधुनिक इतिहासकारों की संकल्पना से पूर्णत: अलग थी। वर्तमान इतिहासकार ऐतिहासिक घटनाओं में कारण-कार्य संबंध स्थापित करने का प्रयास करते हैं लेकिन प्राचीन इतिहासकार केवल उन घटनाओं या तथ्यों का वर्णन करता था जिनमें आम जनमानस को कुछ सीखने को मिल सके। महाभारत में इतिहास की जो संकल्पना दी गई है उससे भारतीयों की इतिहास विषयक संकल्पना उद्‌भासित होती है। महाभारत के अनुसार ऐसी प्राचीन लोकप्रिय कथा जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की व्यावहारिक शिक्षा मिल सके, 'इतिहास' कहलाती है। प्राचीन युग में भारतीय धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों को जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक समझते थे। इसीलिये प्राचीन भारत का इतिहास राजनीतिक कम और सांस्कृतिक अधिक है। भारतीय इतिहासकारों का दृष्टिकोण पूर्णतया धर्मपरक था, किंतु धर्म के अतिरिक्त अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक कारण थे जिन्होंने भारत में अनेक आंदोलनों, संस्थाओं और विचारधाराओं को जन्म दिया। अत: भारतीय इतिहास का सार्वभौमिक स्वरूप जानने के लिये इन तथ्यों का अध्ययन करना आवश्यक है।

आधुनिक इतिहासकारों ने इतिहास में केवल राजनीतिक तथ्यों का वर्णन करना ही अपना कर्त्तव्य नहीं समझा बल्कि उनके वर्णन में आम जनमानस भी उतना ही महत्त्व रखते हैं जितना कि सम्राटों अथवा साम्राज्यों के उत्थान और पतन। वह उन राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं बौद्धिक परिवर्तनों का विश्लेषण एवं अध्ययन करता है, जिनके द्वारा मनुष्य उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके अपने जीवनकाल को पूर्व की अपेक्षा अधिक सुखमय बनाने का प्रयत्न करता है। अत: प्रसिद्ध इतिहासकार डी.डी. कोसांबी के अनुसार, "उत्पादन के साधनों और उनके पारस्परिक संबंधों का तिथि क्रमानुसार अध्ययन करने से ही विकास के कालक्रम की विस्तृत जानकारी मिल सकती है।" उनके अनुसार, इसके आधार पर हम यह जान सकते हैं कि जनसाधारण किस प्रकार अपना जीवन-यापन करता था।

भारतीय इतिहास के काल को तीन भागों में बाँटकर देखा जा सकता है– वह काल जिसके लिये कोई लिखित साधन उपलब्ध नहीं है और जिसमें मनुष्य का जीवन अपेक्षाकृत पूर्णत: सभ्य नहीं था, 'प्रागैतिहासिक काल' कहलाता है। इतिहासकार उस काल को 'ऐतिहासिक काल' का नाम देते हैं जिसके लिये लिखित साक्ष्य उपलब्ध हैं और जिसमें मनुष्य सभ्य बन गया था। प्राचीन भारतीय इतिहास में लिखित साधन उपलब्ध तो हैं लेकिन वे अस्पष्ट और गूढ़ लिपि में हैं जिनका अर्थ निकालना कठिन है। इस काल को भारतीय इतिहासकार आद्य ऐतिहासिक काल का इतिहास कहते हैं। सैंधव संस्कृति की गणना 'आद्य ऐतिहासिक काल' के अंतर्गत की जाती है। इसी आधार पर हड़प्पा संस्कृति से पूर्व का भारतीय इतिहास 'प्रागैतिहासिक' और लगभग ईसा पूर्व 600 के बाद का इतिहास 'ऐतिहासिक काल' कहलाता है क्योंकि भारत में प्राचीनतम लिखित साक्ष्य अशोक के अभिलेख हैं जिनका काल ईसा से पूर्व तीसरी शताब्दी है और इस भाषा के विकास में भी लगभग 300 वर्ष लगे होंगे।

प्रागैतिहासिक काल का इतिहास लिखते समय इतिहासकार को पूर्णतया पुरातात्त्विक साक्ष्यों पर निर्भर रहना पड़ता है। आद्य इतिहास लिखते समय वह पुरातात्त्विक एवं साहित्यिक दोनों प्रकार के साधनों का उपयोग करता है तथा इतिहास लिखते समय वह इन दोनों साधनों के अतिरिक्त विदेशी लेखकों के वर्णनों का प्रयोग करता है। विदेशी यात्रियों के वर्णन भी साहित्यिक साधन हैं लेकिन उनकी उपयोगिता के विस्तृत वर्णन की आवश्यकता के कारण उनका वर्णन अलग शीर्षक के अंतर्गत किया गया है। इन सभी ऐतिहासिक साक्ष्यों का उपयोग करके इतिहासकार काल विशेष का ठीक-ठीक चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

अत: हम सुविधा के लिये भारतीय इतिहास को जानने के साधनों को दो शीर्षकों में रख सकते हैं–

- पुरातात्त्विक स्रोत
- साहित्यिक स्रोत।

(ख) चीनी यात्रियों के विवरण ***(Description by Chinese Travellers):*** चीनी यात्रियों में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण फाह्यान, ह्वेनसांग और इत्सिंग के वर्णन हैं। इनके वर्णन चीनी भाषा में अभी तक उपलब्ध हैं तथा इनके अंग्रेज़ी अनुवाद कर दिये गए हैं। फाह्यान 5वीं शती ईसवी में भारत आया था और 14 वर्ष भारत में रहा तथा उसने विशेष रूप से भारत में बौद्ध धर्म की स्थिति के विषय में लिखा। ह्वेनसांग हर्ष के शासनकाल में भारत आया था और वह 16 वर्ष भारत में रहा। ह्वेनसांग का यात्रा विवरण 'सि-यू-की' के नाम से प्रसिद्ध है। उसने धार्मिक अवस्था के साथ-साथ तत्कालीन राजनीतिक दशा का भी वर्णन किया है तथा हर्ष, भास्कर वर्मन आदि के विषय में लिखा है। किंतु इनका दृष्टिकोण ज़्यादातर धार्मिक ही था, जिसका इनके वर्णन पर स्पष्टत: प्रभाव दिखाई पड़ता है। चीनी लेखक भारत का उल्लेख 'यिन-तु' के नाम से करते हैं। इसके अतिरिक्त मात्वालिन नामक चीनी यात्री ने चालुक्यों के शासनकाल में भारत-चीन संबंधों का विवरण अपने यात्रा-वृत्तांत में दिया है। इत्सिंग 671 ई. में भारत आया, उसने अपने विवरण में नालंदा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय तथा उस समय के भारत की स्थिति का वर्णनि किया है।

(ग) अरब यात्रियों के विवरण ***(Description by Arabian Travellers):*** अरब यात्रियों ने लगभग 8वीं शताब्दी से भारत के विषय में वर्णन करना शुरू कर दिया था। सुलेमान 9वीं शती ईसवी के मध्य भारत आया था तथा इसने पाल और प्रतिहार राजाओं के विषय में लिखा है। अल मसूदी 941 ई. से 943 ई. तक भारत में रहा। उसने राष्ट्रकूट राजाओं की महत्ता के विषय में लिखा है। अरब यात्रियों के विवरण में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान अबूरिहान का है। उसका दूसरा नाम अलबरूनी था। वह महमूद गज़नवी का समकालीन था। उसने संस्कृत भाषा सीखी और भारत की सभ्यता एवं संस्कृति को पूर्ण रूप से जानने का प्रयत्न किया। उसका महत्त्वपूर्ण ग्रंथ 'तहकीक-उल-हिंद' है और इसमें भारत का बहुत तर्कसंगत और पूर्ण वर्णन है। अलबरूनी ने भारतीय गणित, भौतिकी, रसायनशास्त्र, सृष्टिशास्त्र, ज्योतिष, भूगोल, दर्शन, धार्मिक क्रियाओं, रीति-रिवाज़ों और सामाजिक विचारधारा का महत्त्वपूर्ण वर्णन किया है।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि इतिहास लेखन में ग्रंथों, सिक्कों, अभिलेखों और पुरातत्त्व आदि से प्राप्त साक्ष्यों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आधुनिक इतिहासकार काल विशेष से संबंध रखने वाली साहित्यिक तथा पुरातात्त्विक सामग्री का उपयोग करके सही चित्र प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है। साहित्यिक स्रोतों का उपयोग करते समय वह उस काल की विचारधारा का ध्यान रखता है जिससे प्रेरित होकर लेखक ने अपने ग्रंथों की रचना की थी।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- 'द नेचुरल हिस्ट्री' प्लिनी द एल्डर की रचना है। 'द हिस्टरीज' हेरोडोटस, जबकि 'लाइफ ऑफ ह्वेनसांग' हुई-ली, वहीं 'हिस्टोरियल फिलिप्पिकल' पांपेइस ट्रोगस की रचना है।
- हेरोडोटस को इतिहास का पिता कहा जाता है।
- ऐहोल अभिलेख पुलकेशिन द्वितीय से संबंधित है।
- प्रयाग स्तंभलेख में समुद्रगुप्त की विजयों एवं नीतियों का वर्णन है।
- जूनागढ़ अभिलेख रुद्रदामन से संबंधित है।
- सिक्कों के अध्ययन को मुद्राशास्त्र (न्यूमिस्टेटिक्स) कहते हैं।
- कुषाणकालीन मूर्तियों पर वैदेशिक प्रभाव स्पष्टत: दिखाई पड़ता है।
- 'नागर' तथा 'द्रविड़' शैली के मिश्रित स्वरूप को बेसर शैली कहते हैं।
- 'अष्टाध्यायी' पाणिनि की रचना है।
- 'वृहत्कथामंजरी' क्षेमेंद्र की रचना है।
- 'परिशिष्टपर्वन' हेमचंद्र की रचना है।
- 'रघुवंशम्' तथा 'मालविकाग्निमित्रम्' कालिदास की रचना हैं।
- यूनानी लेखकों के ग्रंथों में 'पेरिपल्स ऑफ दि एरिथ्रियन सी' प्रमुख है।
- 'इंडिका' मेगास्थनीज की रचना है, जिससे मौर्य प्रशासन की जानकारी मिलती है।
- 'सौंदरानंद' अश्वघोष की रचना है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'अष्टाध्यायी' किसके द्वारा लिखी गई है?
   (a) वेदव्यास (b) पाणिनि
   (c) शुकदेव (d) वाल्मीकि
2. प्राचीन भारत के इतिहास के अध्ययन के लिये सबसे महत्त्वपूर्ण और विश्वसनीय स्रोत है-
   (a) अभिलेख
   (b) साहित्यिक साक्ष्य
   (c) विदेशी यात्रियों के विवरण
   (d) सिक्के
3. महाभाष्य के रचयिता हैं-
   (a) पाणिनि (b) महर्षि पतंजलि
   (c) यास्क (d) कालिदास
4. विशाखदत्त की पुस्तक 'मुद्राराक्षस' से किस काल के इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है?
   (a) मौर्यकाल (b) गुप्त काल
   (c) मौर्योत्तर काल (d) गुप्तोत्तर काल
5. कश्मीर के इतिहास की विस्तृत जानकारी मिलती है-
   (a) मुद्राराक्षस (b) राजतरंगिणी
   (c) हर्षचरित (d) रत्नावली
6. 'सि-यू-की' नामक यात्रा विवरण निम्नलिखित में से किससे जुड़ा है?
   (a) फाह्यान (b) अलबरूनी
   (c) मेगास्थनीज (d) ह्वेनसांग
7. कल्हणकृत 'राजतरंगिणी' में कुल कितने तरंग हैं?
   (a) आठ (b) नौ
   (c) दस (d) ग्यारह
8. निम्नलिखित में से कौन-सा जोड़ा सही सुमेलित नहीं है?
   (a) लाइफ ऑफ ह्वेनसांग : हुई-ली
   (b) द नेचुरल हिस्ट्री : टॉलमी
   (c) हिस्टोरियल फिलिप्पिकल : पांपेइस ट्रोगस
   (d) द हिस्टरीज़ : हेरोडोटस
9. निम्नलिखित में से किस चीनी यात्री ने चालुक्यों के शासन काल में चीन एवं भारत के संबंधों का विवरण दिया है?
   (a) फाह्यान (b) ह्वेनसांग
   (c) इंत्सिग (d) मात्वालिन
10. हर्ष ने निम्नलिखित में से किन रचनाओं का लेखन किया था?
    1. प्रियदर्शिका 2. नागानंद
    3. हर्षचरित 4. रत्नावली
    नीचे दिये गये कूट का उपयोग कर अपना उत्तर दीजिये-
    (a) 1, 2, 3 और 4
    (b) केवल 1, 2 और 4
    (c) केवल 1, 2, और 3
    (d) केवल 2 और 3

उत्तरमाला

1. (b) 2. (a) 3. (b) 4. (a) 5. (b) 6. (d) 7. (a) 8. (b) 9. (d) 10. (b)

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 700-800 शब्दों में दीजिये)

1. प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोतों की चर्चा करते हुए संबंधित अभिलेखों तथा सिक्कों का उल्लेख कीजिये।
3. प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत के रूप में विदेशी यात्रियों के द्वारा दिये गए विवरणों के महत्त्व पर प्रकाश डालिये।
3. प्राचीन इतिहास के स्रोत के रूप में साहित्यिक स्रोतों के महत्त्व की विवेचना कीजिये।

अध्याय
2

प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric Age)

प्रागैतिहासिक काल वह काल है जिसकी जानकारी पुरातात्त्विक स्रोतों से प्राप्त होती है। इस काल को 'प्रस्तर युग' भी कहते हैं। प्रागैतिहासिक काल का अर्थ 'इतिहास से पूर्व का युग' होता है।

2.1 पुरापाषाण काल *(Palaeolithic Age)*

पुरापाषाण संस्कृति का उदय अतिनूतन (Pleistocene) युग में हुआ था। इस युग में धरती बर्फ से ढकी हुई थी। भारतीय पुरापाषाण काल को मानव द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले पत्थर के औज़ारों के स्वरूप और जलवायु में होने वाले परिवर्तन के आधार पर तीन अवस्थाओं में बाँटा जाता है–

(क) निम्न पुरापाषाण काल : (5,00,000 ई.पू. से 50,000 ई.पू. के मध्य)
(ख) मध्य पुरापाषाण काल : (50,000 ई.पू. से 40,000 ई.पू. के मध्य)
(ग) उच्च पुरापाषाण काल : (40,000 ई.पू. से 10,000 ई.पू. के मध्य)

अपवादस्वरूप दक्कन के पठार में मध्य पुरापाषाण काल और उच्च पुरापाषाण काल, दोनों के औज़ार मिलते हैं।

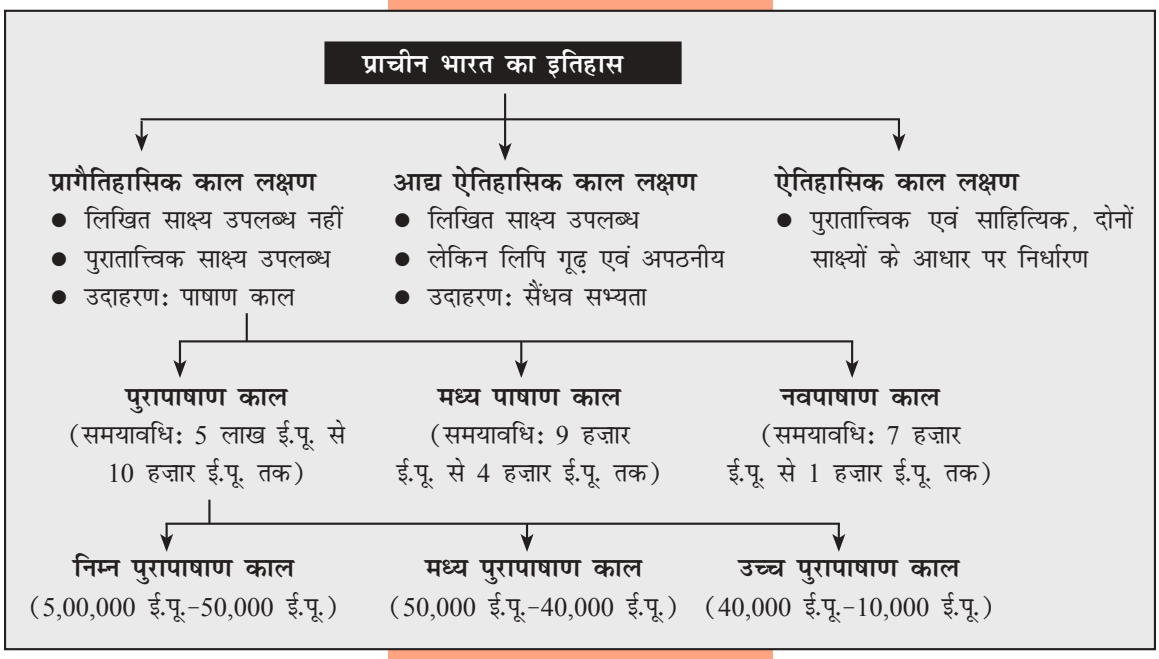

पुरापाषाण काल के औज़ार *(Palaeolithic Tools)*

काल	औज़ार (मुख्य)
निम्न पुरापाषाण काल	हाथ की कुल्हाड़ी, तक्षणी, काटने का औज़ार
मध्य पुरापाषाण काल	काटने वाले औज़ार (फलक, वेधनी, खुरचनी)
उच्च पुरापाषाण काल	तक्षणी और खुरचनी

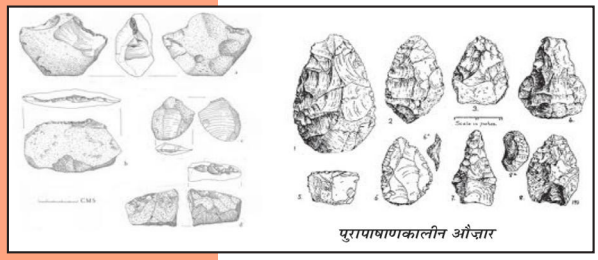
पुरापाषाणकालीन औज़ार

अध्याय
3

सिंधु घाटी सभ्यता
(Indus Valley Civilization)

सिंधु घाटी सभ्यता का उद्भव ताम्र-पाषाण काल में भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर क्षेत्र में हुआ था, जो वर्तमान में भारत, पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के कुछ क्षेत्रों में अवस्थित है। इस काल की सभी संस्कृतियों में सैंधव सभ्यता सबसे विकसित, विस्तृत और उन्नत अवस्था में थी। इसे हड़प्पा सभ्यता (Harappan Civilization) भी कहते हैं, क्योंकि सर्वप्रथम 1921 ई. में हड़प्पा नामक स्थान से ही इस संस्कृति के संबंध में जानकारी मिली थी। सैंधव सभ्यता अनुकूलता के मध्य उत्पन्न हुई थी, जिसका ज्ञान उत्खनन एवं अनुसंधान द्वारा होता है। सैंधव सभ्यता एक नगरीय सभ्यता थी, क्योंकि इसके पुरातात्त्विक अवशेषों से परिवहन, व्यापार, तकनीकी, उत्पादन एवं नियोजित नगर व्यवस्था के तत्त्व प्राप्त होते हैं।

3.1 सैंधव सभ्यता का उद्भव *(Origin of Indus Civilization)*

हड़प्पा सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक मानी जाती है। यह भारतीय उपमहाद्वीप में प्रथम नगरीय क्रांति को दर्शाती है। इसका क्षेत्रीय विस्तार, नगर-नियोजन तथा सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता आदि इसे एक विशिष्ट सभ्यता के रूप में स्थापित करती हैं। यह **कांस्ययुगीन** सभ्यता थी। कार्बन डेटिंग पद्धति (C_{14}) के आधार पर इस सभ्यता का काल लगभग 2500 ई.पू.–1750 ई. पू. माना जाता है। यह सभ्यता 400 – 500 वर्षों तक विद्यमान रही। नवीन शोध के अनुसार यह सभ्यता लगभग 8,000 साल पुरानी है। हड़प्पा सभ्यता के उद्भव को निम्नलिखित रूप से वर्गीकृत किया जाता है–

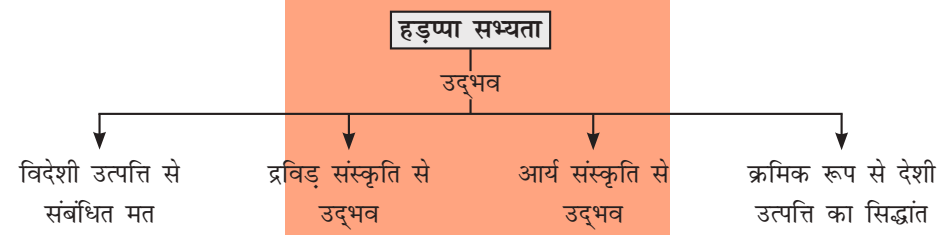

उद्भव *(Emergence)*

हड़प्पा सभ्यता का उद्भव ताम्र-पाषाणिक पृष्ठभूमि पर भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर क्षेत्र में हुआ जो वर्तमान में भारत, पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के कुछ क्षेत्रों में अवस्थित है। विस्तृत खोजों के बावजूद इस सभ्यता के उद्भव तथा विकास के संदर्भ में कोई ठोस जानकारी नहीं मिल पाई है। उद्भव की प्रक्रिया को जानने में कई सारी व्यावहारिक समस्याएँ हैं, जैसे- क्षैतिज उत्खनन का न होना, ऊर्ध्वाधर खनन भी जलस्तर के ऊपर तक होना, लिपि का अध्ययन नहीं हो पाना आदि।

इस प्रकार आवश्यक साक्ष्यों का अभाव, जैसे- साहित्यिक स्रोतों का अनुपलब्ध होना एवं पुरातात्त्विक स्रोतों द्वारा अपर्याप्त सूचना देना हड़प्पा सभ्यता के उद्भव की व्याख्या में एक बड़ी समस्या है। इस कारण से इस सभ्यता के उद्भव के संबंध में विभिन्न इतिहासकारों ने भिन्न-भिन्न मत व्यक्त किये हैं।

1. *विदेशी उत्पत्ति से संबंधित मत*

इस मत के प्रतिपादक **मार्टिमर व्हीलर** और **गार्डन चाइल्ड** जैसे इतिहासकार हैं। इसके लिये इन्होंने **सांस्कृतिक विसरण** का सिद्धांत प्रयुक्त किया। अन्नागार, गढ़ी तथा बुर्ज में प्रयुक्त शहतीरों के आधार पर मेसोपोटामिया से संबंध जोड़ा जाता है। उसी प्रकार बलूचिस्तान से प्राप्त मिट्टी के ढेरों की तुलना मेसोपोटामिया से प्राप्त जिगुरत (Ziggurat) (मंदिर) से की गई है। इनका मानना है कि मेसोपोटामिया से नगरीय सभ्यता के गुण भारत पहुँचे, लेकिन पुरातात्त्विक साक्ष्य इसके विपरीत हैं। हड़प्पा नगर-योजना मेसोपोटामिया से कहीं अधिक विकसित थी। हड़प्पा में पकी हुई ईंटों का प्रचुर प्रयोग मिलता है। हड़प्पाई मुहर,

अध्याय
4

आर्य (Aryan)

आर्य वैदिक संस्कृति के निर्माता माने जाते हैं। आर्यों का इतिहास हमें मुख्यत: वेदों से ज्ञात होता है। आर्य संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ श्रेष्ठ होता है। आर्य भाषासूचक शब्द है, न कि प्रजातिसूचक। आर्यों को लिपि का ज्ञान नहीं था, अत: वे अपने ज्ञान को सुनकर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाते थे। ऐसा माना जाता है कि 2000 ई.पू. के आस-पास कुछ ऐसे लोग थे जो ऐसी भाषाओं का प्रयोग करते थे जिनका एक-दूसरे से घनिष्ठ संबंध था, जिन्हें हम आर्य भाषाएँ कह सकते हैं। इन भाषाओं में संस्कृत, लैटिन, ग्रीक, जर्मन, स्लाव इत्यादि आर्य परिवार की भाषाएँ हैं। इन भाषाओं की आपसी समानता के आधार पर यह मान लिया गया कि मूल आर्य सामान्यत: एक ही क्षेत्र के रहने वाले थे।

इतिहासकारों और भाषाविदों के द्वारा इंडो-यूरोपीय या इंडो-आर्य शब्दावलियों का प्रयोग नस्लभेद के अर्थ में नहीं बल्कि विशेष भाषा परिवार के संदर्भ में किया गया है। इंडो-आर्य वैसे लोग थे, जो इंडो-यूरोपीय भाषा परिवार की इंडो-ईरानी शाखा से जुड़ी एक भाषा का प्रयोग करते थे।

4.1 आर्यों का मूल निवास स्थान *(Origin of the Aryans)*

सामान्यत: यह माना जाता है कि जिन विदेशी आक्रांताओं ने सैंधव नगरों को ध्वस्त किया, वे आर्य ही थे। स्वयं ऋग्वेद में इस संघर्ष का अप्रत्यक्ष रूप से उल्लेख मिलता है किंतु अब आर्य आक्रमण का सिद्धांत खोखला सिद्ध हो चुका है। आर्य किस प्रदेश के निवासी थे, उनका मूल निवास स्थान कहाँ था भारत या भारत के बाह्य प्रदेश, इन प्रश्नों को लेकर विद्वानों में मतभेद हैं। यहाँ कुछ प्रमुख मतों का उल्लेख किया गया है-

देशी मूल के संदर्भ में तर्क *(Argumeats in favour of Native Origin)*

अनेक विद्वानों ने यह माना है कि आर्य भारत के ही मूल निवासी थे, संभवत: यहीं से वे विश्व के विभिन्न भागों में जाकर बस गए होंगे। इनमें कुछ प्रमुख तथ्य निम्नलिखित हैं-

- भगवान दास गिडवानी ने अपनी पुस्तक 'रिटर्न ऑफ द आर्यंस' में भारत को ही आर्यों का मूल निवास स्थान माना है।
- पं. गंगानाथ झा के अनुसार, आर्यों का मूल निवास ब्रह्मर्षि देश था और यहीं से पूरब की तरफ गए।
- डी.एस. त्रिवेदी के अनुसार, आर्य वर्तमान पाकिस्तान के मुल्तान के निवासी थे, जिसे देविका प्रदेश के नाम से जाना जाता था। देविका नदी मुल्तान (पाकिस्तान) में बहती है।
- डॉ. एस.डी. कल्ला का मत है कि आर्य भारत के कश्मीर प्रांत तथा हिमालय क्षेत्र के मूल निवासी थे।
- डॉ. अविनाशचंद्र दास एवं डॉ. संपूर्णानंद ने आर्यों को सप्तसैंधव प्रदेश का निवासी माना है।

परंतु आर्यों को भारत का मूल निवासी मानने में कई विसंगतियाँ दिखाई देती हैं, जैसे- यदि आर्य भारत के ही निवासी थे तो संपूर्ण भारत का आर्थीकरण एक साथ क्यों नहीं हुआ। दूसरा यह कि सिंधु सभ्यता और ऋग्वैदिक सभ्यता का विकास विभिन्न परिस्थितियों में कैसे हुआ जबकि आर्य यहीं के मूल निवासी थे।

विदेशी मूल के पक्ष में तर्क *(Arguments in Favor of Foreign Origin)*

आर्य भारत के मूल निवासी नहीं थे बल्कि वे बाहर से आकर बसे थे। इस पक्ष में विभिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न तर्क प्रस्तुत किये हैं-

- सर्वप्रथम बालगंगाधर ने उत्तरी ध्रुव को आर्यों का मूल निवास माना है। उनका मानना है कि आर्यों ने ऋग्वेद की रचना सप्तसैंधव प्रदेश में की थी। इसमें उन्होंने एक सूत्र के अंतर्गत दीर्घकालीन ऊषा की स्तुति की है। तिलक ने इस स्तुति

अध्याय
5

वैदिक सभ्यता (Vedic Civilization)

सिंधु घाटी सभ्यता (Indus Valley Civilization) के पश्चात् भारत में जिस नवीन सभ्यता का विकास हुआ उसे ही आर्य (Aryan) अथवा वैदिक सभ्यता (Vedic Civilization) के नाम से जाना जाता है। इस काल की जानकारी हमें मुख्यत: वेदों से प्राप्त होती है, जिसमें ऋग्वेद सर्वप्राचीन होने के कारण सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। वैदिक काल को ऋग्वैदिक या पूर्व-वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.) तथा उत्तर-वैदिक काल (1000-600 ई.पू.) में बाँटा गया है।

वैदिक काल (1500-600 ई.पू.)

ऋग्वैदिक काल/पूर्व-वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.) | **उत्तर-वैदिककाल (1000-600 ई.पू.)**

5.1 ऋग्वैदिक काल : 1500-1000 ई.पू. *(Rigvedic Age : 1500–1000 BC)*

भारत में आर्यों (Aryans) के आरंभिक इतिहास के संबंध में जानकारी का प्रमुख स्रोत वैदिक साहित्य है। इस साहित्य के अलावा वैदिक युग (Vedic Age) के बारे में जानकारी का एक अन्य स्रोत पुरातात्त्विक साक्ष्य (Archaeological Evidences) हैं, लेकिन ये अपनी कतिपय त्रुटियों के कारण किसी स्वतंत्र अथवा निर्विवाद जानकारी का स्रोत न होकर साहित्यिक स्रोतों के आधार पर किये गए विश्लेषण की पुष्टि मात्र करते हैं।

मंडल	रचयिता
प्रथम मंडल	ऋषिगण
द्वितीय मंडल	गृत्समद
तृतीय मंडल	विश्वामित्र
चतुर्थ मंडल	वामदेव
पंचम मंडल	अत्रि
षष्ठ मंडल	भरद्वाज
सप्तम मंडल	वसिष्ठ
अष्ठम मंडल	कण्व एवं अंगिरस
नवम मंडल	पवमान अंगिरा (ऋषिगण)
दसवाँ मंडल	ऋषिगण

साहित्यिक स्रोत *(Literary Sources)*

ऋग्वेद (Rigveda) वैदिक काल की रचना है। इसमें 10 मंडल (Divisions) तथा 1028 सूक्त (Hymns) हैं। इसे **स्रोत्रों का संकलन** भी कहा जाता है। इसकी रचना 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. के मध्य हुई। इसके कुल 10 मंडलों में से दूसरे से सातवें तक के मंडल सबसे प्राचीन माने जाते हैं, जबकि प्रथम तथा दसवाँ मंडल परवर्ती काल के माने गए हैं। ऋग्वेद के दूसरे से सातवें मंडल को गोत्र मंडल (Clan Division) के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इन मंडलों की रचना किसी गोत्र (Clan) विशेष से संबंधित एक ही ऋषि (Sage) के परिवार ने की थी। ऋग्वेद की अनेक बातें फारसी भाषा के प्राचीनतम ग्रंथ अवेस्ता (ईरान क्षेत्र से संबंधित) से भी मिलती हैं। गौरतलब है कि इन दोनों धर्मग्रंथों में बहुत से देवी-देवताओं और सामाजिक वर्गों के नाम भी मिलते-जुलते हैं।

पुरातात्त्विक स्रोत *(Archaeological Sources)*

1. **कस्सी अभिलेख (1600 ई.पू.):** इन अभिलेखों से यह जानकारी मिलती है कि ईरानी आर्यों (Iranian Aryans) की एक शाखा का भारत आगमन हुआ।
2. **बोगजकोई (मितन्नी) अभिलेख (1400 ई.पू.):** इन अभिलेखों में हित्ती राजा सुब्बिलिमा और मितन्नी राजा मतिऊअजा के मध्य हुई संधि के साक्षी के रूप में वैदिक देवताओं- इंद्र, वरुण, मित्र, नासत्य आदि का उल्लेख है।
3. **चित्रित धूसर मृद्भांड** (Painted Grey Wares – P.G.W.)।

अध्याय
6

लिच्छवि गणराज्य (Lichchhavi Republic)

प्रारंभ में अधिकांश इतिहासकारों की यह धारणा थी प्राचीन भारत में केवल राजतंत्र ही थे किंतु बाद में किये गए अनुसंधान के आधार पर यह तथ्य सामने आया कि राजतंत्र के साथ-साथ गणतंत्र अथवा संघ राज्यों का अस्तित्व भी था। बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तरनिकाय और जैन ग्रंथ भगवतीसूत्र में 16 महाजनपदों का उल्लेख। इनमें दो प्रकार के राज्य थे। पहला राजतंत्र और दूसरा गणतंत्र। गणतंत्रात्मक राज्यों का शासन राजा द्वारा संचालित न होकर गण अथवा संघ द्वारा होता था। वाणिज्य और मल्ल संघ इस प्रकार के राज्य थे।

वज्जि संघ आठ राज्यों का एक संघ था, इसमें वज्जि के अतिरिक्त वैशाली के लिच्छवि, मिथिला के विदेह तथा कुंडग्राम के ज्ञातृक विशेष रूप से प्रसिद्ध थे। बुद्धकाल में लिच्छवि सबसे बड़ा और शक्तिशाली गणराज्य था। इसे विश्व का प्रथम गणतंत्र भी कहा जाता है। संपूर्ण वज्जि संघ की राजधानी वैशाली थी। वज्जि संघ को लिच्छवि संघ भी कहा जाता है। वैशाली का नामकरण इक्ष्वांकुवंशीय राजा विशाल के नाम पर हुआ था। वैशाली की पहचान आधुनिक बिहार के मुज़फ्फरपुर ज़िले के वसाढ़ नामक स्थान से की जाती है। लिच्छवि गणराज्य की स्थापना कब हुई, यह निश्चित करना कठिन है। फिर भी 700 ई.पू. के आसपास निर्धारित किया जाता है। लिच्छवि गणराज्य को मगध सम्राट अजातशत्रु ने समाप्त किया।

लिच्छवियों का गणतांत्रिक संविधान *(The Constitution of the Lichchnavis)*

अट्ट कथा में लिच्छवि संविधान का वर्णन है। गण की कार्यपालिका का अध्यक्ष एक निर्वाचित पदाधिकारी होता था जिसे राजा कहा जाता था। अन्य पदाधिकारियों में उपराजा (उपाध्यक्ष), सेनापति और भांडागारिक (कोषाध्यक्ष) प्रमुख थे। उपरोक्त चारों उच्च अधिकारियों से ही मंत्रिमंडल बनता था। परंतु राज्य की वास्तविक शक्ति संस्थागार (एक केंद्रीय समिति) के अंतर्गत होती थी। एक पण्ण जातक के अनुसार लिच्छवि गणराज्य की केंद्रीय समिति में 7707 राजा थे तथा उपराजाओं, सेनापतियों और कोषाध्यक्षों की संख्या भी यही थी। यह संभावना व्यक्त की जाती है कि सभी सदस्य राज्य के कुलीन परिवारों के प्रमुख थे जिन्हें राजा की पदवी का अधिकार था। ऐसा प्रतीत होता है कि लिच्छवि राज्य अनेक छोटी-छोटी इकाइयों में विभक्त था तथा प्रत्येक इकाई का अध्यक्ष एक राजा होता था जो शासन का संचालन अपने अधीन पदाधिकारियों के माध्यम से चलाता था। प्रत्येक इकाई का अध्यक्ष संस्थागार का सदस्य होता था।

संस्थागार में गणराज्यों से संबंधित विभिन्न महत्त्वपूर्ण विषयों (राजस्व संग्रह, कूटनीतिक संधि-विग्रह आदि) के ऊपर निर्णय पर्याप्त चर्चा के पश्चात् बहुमत के आधार पर लिया जाता था। अतः उस समय गणराज्यों का शासन जनतंत्रात्मक ढंग से चलाया जाता था। यह माना जाता है कि बौद्ध संघ की कार्यप्रणाली गणराज्यों की कार्यप्रणाली पर आधारित थी। इस आधार पर लिच्छवि गणराज्य की कार्यप्रणाली के संदर्भ में कुछ निष्कर्ष निकाला जा सकता है। इस संदर्भ में संस्थागार और आधुनिक संसद की कार्यप्रणालियों की समानता की जा सकती है। संस्थागार के प्रत्येक सदस्य के बैठने के लिये स्थान निर्धारित था और यह कार्य 'आसनपन्नापक' नामक पदाधिकारी द्वारा किया जाता था। इसी प्रकार कोरम की पूर्ति, मतगणना और प्रस्ताव रखने के स्पष्ट और निश्चित नियम होते थे।

लिच्छवियों के विदेश मामलों की देखरेख के लिये 9 सदस्यीय समिति तथा न्यायिक प्रशासन का 8 सदस्यों की परिषद द्वारा संचालन होता था। राजा का न्यायालय सर्वोच्च होता था और दंड देने का अधिकार केवल राजा को ही था। वह दंड देते समय 'पवेनिपोट्ठक' अर्थात् पूर्व दृष्टांतों का अनुसरण करता था। जनता की स्वतंत्रता की रक्षा के लिये सभी प्रकार की सावधानियाँ रखी जाती थीं। किसी व्यक्ति को उस समय तक अपराधी नहीं माना जाता था, जब तक कि राजा, उपराजा और सेनापति द्वारा मामले की जाँच के बाद स्वीकारात्मक निर्णय पर न पहुँचा जाए। न्यायालयों के निर्णयों का नियमित रिकॉर्ड रखा जाता था।

गणराज्यों में ग्राम पंचायतें भी होती थीं जो राजतंत्रात्मक राज्यों की भाँति ही अपना कार्य करती थीं तथा कृषि, व्यापार और उद्योग आदि के विकास से संबंधित कार्यों का ध्यान रखती थीं।

अध्याय
7

छठी शताब्दी ईसा पूर्व का काल (महाजनपद काल)
[Era of the Sixth Century B.C. (Mahajanpada Age)]

छठी शताब्दी ईसा पूर्व का काल भारतीय इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। भारत में इस शताब्दी में सभी क्षेत्रों में अपूर्व क्रांतियाँ हुईं और सर्वत्र एक नई चेतना का उदय हुआ। इसी शताब्दी में भारत में राज्यों के निर्माण की प्रक्रिया शुरू हुई और मगध में साम्राज्यवाद की नींव पड़ी। इस काल से पूर्व का काल राजनीतिक अंतर्विरोधों का काल था। नवीन धर्मों यथा बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म का उदय इसी काल में हुआ। आर्थिक दृष्टि से भी यह क्रांति का युग था, फलतः द्वितीय नगरीकरण की प्रक्रिया भी इसी काल में सामने आई। लोक भाषाओं का उद्‌भव तथा सामाजिक-धार्मिक स्थिति में नियमन हेतु **सूत्र-साहित्य** की रचना भी इसी काल में हुई। इस बहुमुखी विकास के कारण ही इस काल का भारत के इतिहास में विशिष्ट स्थान है।

7.1 धार्मिक आंदोलनः जैन धर्म व बौद्ध धर्म *(Religious Movement: Jainism and Buddhism)*

ईसा पूर्व छठी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मध्य गंगा के मैदान में अनेक धार्मिक संप्रदायों का उदय हुआ। लगभग सभी धार्मिक संप्रदायों का विरोध धार्मिक व्यवस्था के विरुद्ध था। एक दृष्टि से अगर देखा जाए तो छठी शताब्दी ईसा पूर्व के ऐसे धर्म सुधार आंदोलन की पृष्ठभूमि उत्तर-वैदिक काल के अंत तक तैयार हो चुकी थी। तत्कालीन सामाजिक विद्वेष के वातावरण, आर्थिक क्षेत्र में हुए परिवर्तन, धार्मिक आडंबर आदि ने सुधार आंदोलन की भूमिका तैयार की। इस युग के लगभग 62 संप्रदाय (बौद्ध ग्रंथों के अनुसार) ज्ञात हैं, जिनमें बौद्ध धर्म (गौतम), जैन धर्म (महावीर), नियतिवाद (मक्खलि गोशाल) आदि प्रमुख हैं। इनमें से जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए, जिन्होंने अपने उपदेशों तथा कार्यों से समाज को प्रभावित किया। इन्होंने जहाँ वैदिक धर्म की कुरीतियों तथा अतिवादी पंथ की आलोचना की, वहीं सामाजिक समस्या के समाधान का विकल्प भी प्रस्तुत किया। यही कारण है कि इन पंथों की जड़ें भारतीय समाज तथा संस्कृति में गहरी पैठ बना सकीं।

उद्‌भव के कारण *(Cause of Emergence)*

वैदिकोत्तर काल में समाज स्पष्टतः चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) में विभाजित था तथा उनके कर्त्तव्य भी अलग-अलग निर्धारित थे। इस बात पर ज़ोर दिया जाता था कि वर्ण जन्ममूलक है। ब्राह्मण, जिन्हें पुरोहितों और शिक्षकों का कर्त्तव्य सौंपा गया था, समाज में अपना स्थान सबसे ऊँचा होने का दावा करते थे। वे कई विशेषाधिकारों के दावेदार थे, जैसे- दान लेना, करों से छुटकारा आदि। वर्णक्रम में क्षत्रियों का स्थान दूसरा था। वे शासन करते थे और किसानों से वसूले गए करों पर जीते थे। वैश्य खेती, पशुपालन और व्यापार करते थे और ये ही मुख्य करदाता थे। शूद्रों का कर्त्तव्य ऊपर के तीनों वर्णों की सेवा करना था और उन्हें वेद पढ़ने के अधिकार से वंचित रखा गया था। शूद्रों को स्वभाव से क्रूर, लोभी कहा गया है और उन्हें अस्पृश्य भी माना जाता था। वर्ण-व्यवस्था में जो जितने ऊँचे वर्ण का होता था, वह उतना ही शुद्ध और सुविधाकारी समझा जाता था।

यह स्वाभाविक ही था कि इस तरह के वर्ण-विभाजन वाले समाज में तनाव पैदा हो। वैश्यों और शूद्रों में इसकी कैसी प्रतिक्रिया थी, यह जानने का कोई साधन नहीं है। परंतु क्षत्रिय लोग, जो शासक के रूप में काम करते थे, ब्राह्मणों के धर्म विषयक प्रभुत्व पर प्रबल आपत्ति करते थे। ब्राह्मणों के विशेषाधिकारों के विरुद्ध क्षत्रियों का खड़ा होना नए धर्मों के उद्‌भव का एक प्रमुख कारण बना। जैन धर्म के प्रमुख वर्द्धमान महावीर और बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध दोनों क्षत्रिय वंश के थे और दोनों ने ब्राह्मणों की मान्यता को चुनौती दी।

अध्याय
8

मौर्यकाल
(Mauryan Period)

8.1 मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत *(Sources of Mauryan History)*

मौर्य साम्राज्य की जानकारी के लिये हमारे पास साहित्यिक और पुरातात्त्विक, दोनों प्रकार के स्रोत उपलब्ध हैं। साहित्यिक स्रोतों में कौटिल्य का **अर्थशास्त्र**, विशाखदत्त का **मुद्राराक्षस**, मेगस्थनीज़ की **इंडिका**, बौद्ध साहित्य (दीपवंश, दिव्यावदान), जैन साहित्य और पुराण आदि महत्त्वपूर्ण हैं। वहीं पुरातात्त्विक स्रोतों में **अशोक के अभिलेख** और विभिन्न वस्तुओं के अवशेष, जैसे– बर्तन, सिक्के आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

मौर्यकालीन इतिहास के स्रोत

साहित्यिक स्रोत	विदेशी यात्रियों का वृत्तांत/विवरण	पुरातात्त्विक स्रोत
• अर्थशास्त्र	• मेगस्थनीज़	• अशोक के अभिलेख
• पुराण	• स्ट्रैबो	• जूनागढ़ (गिरनार) अभिलेख
• मुद्राराक्षस नाटक	• कर्टियस आदि	• काली पॉलिश वाले मृद्भांड
• बौद्ध एवं जैन ग्रंथ आदि		• भवन : स्तूप एवं गुफा
		• मुद्रा : आहत मुद्रा (पंचमार्क)

साहित्यिक स्रोत *(Literary Sources)*

- **अर्थशास्त्र:** कौटिल्य द्वारा रचित यह पुस्तक मौर्यकालीन राजनीति और शासन के बारे में सूचना देती है। कौटिल्य (चाणक्य) चंद्रगुप्त मौर्य (मौर्य वंश का संस्थापक) का **प्रधान मंत्री** था।
- **मुद्राराक्षस:** चंद्रगुप्त मौर्य के शत्रुओं के विरुद्ध चाणक्य ने जो चालें चलीं, उनकी विस्तृत कथा **मुद्राराक्षस** नामक नाटक में है, जिसकी रचना **विशाखदत्त** ने की है। साथ ही यह पुस्तक चंद्रगुप्त के समय की सामाजिक-आर्थिक दशा पर भी प्रकाश डालती है।
- **बौद्ध साहित्य:** दीपवंश बौद्ध धर्म को श्रीलंका तक फैलाने में अशोक की भूमिका के बारे में बताता है। अन्य बौद्ध साहित्य (महाबोधिवंश, महावंश, दिव्यावदान) तथा जैन साहित्य (भद्रबाहु का कल्पसूत्र, हेमचंद्र का परिशिष्टपर्वन) से भी मौर्य साम्राज्य के विस्तार पर प्रकाश पड़ता है।
- पुराण मौर्य राजाओं और घटनाओं के बारे में बताते हैं।

नोट: इनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण 'अर्थशास्त्र' है, जो मौर्य प्रशासन के अतिरिक्त चंद्रगुप्त मौर्य के जीवन पर भी प्रकाश डालता है।

विदेशी यात्रियों का वृत्तांत/विवरण *(Foreign Travellers Memoirs/Description)*

इंडिका-मेगस्थनीज़

मेगस्थनीज़ की 'इंडिका' मौर्य इतिहास की जानकारी उपलब्ध कराने का प्रमुख स्रोत है, परंतु यह अपने मूलरूप में प्राप्त नहीं हुई है, बल्कि इसके कुछ भाग परवर्ती लेखकों के ग्रंथों से प्राप्त होते हैं। इनमें स्ट्रैबो, प्लिनी, एरियन, प्लूटार्क तथा जस्टिन के नाम उल्लेखनीय हैं।

अध्याय
9

मौर्योत्तर काल
(Post-Mauryan Period)

मौर्य साम्राज्य के पतन के साथ ही भारतीय इतिहास की राजनीतिक एकता कुछ समय के लिये विखंडित हो गई। अब ऐसा कोई राजवंश नहीं था, जो हिंदूकुश से लेकर कर्नाटक एवं बंगाल तक आधिपत्य स्थापित कर सके। दक्षिण में स्थानीय शासक स्वतंत्र हो उठे। मगध का स्थान साकल, प्रतिष्ठान, विदिशा आदि कई नगरों ने ले लिया। जहाँ एक तरफ कुछ देशी राजवंशों का प्रभुत्व स्थापित हुआ वही दूसरी तरफ देश के पश्चिमोत्तर से पुनः विदेशी आक्रमणकारियों का आगमन हुआ। इन विदेशी आक्रमण कारियों में से कुछ प्रमुख शक्तियों में अपने राज्य की स्थापना की।

मौर्योत्तर काल

देशी राजवंश	प्रमुख विदेशी राजवंश
● शुंग वंश	● इंडो-ग्रीक
● कण्व वंश	● शक
● आंध्र-सातवाहन वंश	● पार्थियन
● चेदि वंश/महामेघवाहन वंश	● कुषाण वंश

9.1 देशी राजवंश *(Desi Dynasty)*

शुंग वंश *(Shunga Dynasty)*

- **संस्थापक** - पुष्यमित्र शुंग
- पुष्यमित्र शुंग ने 185 ई. पू. में मौर्य शासक बृहद्रथ की हत्या करके 'शुंग वंश' की स्थापना की।
- बाणभट्ट ने 'हर्षचरित' में पुष्यमित्र को 'अनार्य' कहा है। पुष्यमित्र कट्टर ब्राह्मणवादी था।
- शुंग वंश के इतिहास के बारे में जानकारी साहित्यिक एवं पुरातात्त्विक, दोनों साक्ष्यों से प्राप्त होते है।

साहित्यिक स्रोत

- **पुराण (वायु और मत्स्य पुराण):** इससे पता चलता है कि शुंग वंश का संस्थापक पुष्यमित्र शुंग था।
- **हर्षचरित:** इसकी रचना बाणभट्ट ने की थी। इसमें अंतिम मौर्य शासक बृहद्रथ की चर्चा है। इससे पता चलता है कि पुष्यमित्र ने अंतिम मौर्य नरेश बृहद्रथ की हत्या कर सिंहासन पर अधिकार कर लिया था।
- **पतंजलि का महाभाष्य:** पतंजलि पुष्यमित्र के पुरोहित थे। इस ग्रंथ में यवनों के आक्रमण की चर्चा है।
- **गार्गी संहिता:** इसमें भी यवन आक्रमण का उल्लेख है। यह एक ज्योतिष ग्रंथ है।
- **मालविकाग्निमित्रम्:** यह कालिदास का नाटक है, जिससे शुंगकालीन राजनीतिक गतिविधियों का ज्ञान प्राप्त होता है।
- **दिव्यावदान:** इसमें पुष्यमित्र शुंग को अशोक के 84,000 स्तूपों को तोड़ने वाला बताया गया है।

पुरातात्त्विक स्रोत

- **अयोध्या अभिलेख:** इस अभिलेख को पुष्यमित्र शुंग के उत्तराधिकारी धनदेव ने लिखवाया था। इसमें पुष्यमित्र शुंग द्वारा कराए गए दो अश्वमेध यज्ञ की चर्चा है।
- **बेसनगर का अभिलेख:** यह यवन राजदूत हेलियोडोरस का है, जो गरुड़ स्तंभ के ऊपर खुदा है। इससे भागवत धर्म की लोकप्रियता का पता चलता है।
- **भरहुत का लेख:** इससे भी शुंग काल के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

- उपर्युक्त साक्ष्यों के अतिरिक्त साँची, बेसनगर, बोधगया आदि स्थानों से प्राप्त स्तूप तथा स्मारक शुंगकालीन कला एवं स्थापत्य की विशिष्टता का ज्ञान कराते हैं। शुंग काल की कुछ मुद्राएँ कौशांबी, अहिच्छत्र, अयोध्या तथा मथुरा से प्राप्त हुई हैं, जिनसे तत्कालीन ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है।

अध्याय
10

गुप्त साम्राज्य
(Gupta Empire)

चौथी सदी ई. के प्रारंभ में भारत में कोई बड़ा संगठित राज्य अस्तित्व में नहीं था। यद्यपि कुषाण एवं शक शासकों का शासन चौथी सदी ई. तक जारी रहा लेकिन उनकी शक्ति काफी कमज़ोर हो गई थी और सातवाहन वंश का शासन तृतीय सदी ई. के मध्य से पहले ही समाप्त हो गया था। ऐसी राजनीतिक स्थिति में **गुप्त राजवंश का उदय** हुआ। कुषाणों के पतन के पश्चात् उत्तर भारत में अनेक राजतंत्रों एवं गणतंत्रों का उदय हुआ। राजतंत्रों में गुप्त, नाग, आभीर, इक्ष्वाकु तथा गणतंत्रों में आर्जुनायन, मालव, यौधेय, लिच्छवी आदि शामिल थे। कुषाणों के बाद लगभग चार शताब्दियों तक भारत का सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास होता रहा, जो कि मुख्यत: गुप्त राजाओं के शासनकाल से संबंधित है। गुप्त वंश का आरंभिक राज्य उत्तर प्रदेश और बिहार में था। संभवत: गुप्त शासकों के लिये बिहार की अपेक्षा उत्तर प्रदेश अधिक महत्त्व वाला प्रांत था, क्योंकि आरंभिक गुप्त मुद्राएँ और अभिलेख मुख्यत: उत्तर प्रदेश से ही पाए गए हैं। गुप्त संभवत: वैश्य थे तथा कुषाणों के सामंत रहे थे। कुषाणों से प्राप्त सैन्य तकनीक एवं वैवाहिक संबंधों ने गुप्त साम्राज्य के प्रसार एवं सुदृढ़ीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

10.1 गुप्त राजवंश के इतिहास के स्रोत *(Sources of History of Gupta Dynasty)*

गुप्त राजवंश का इतिहास जानने के निम्नलिखित तीन महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं- (i) साहित्यिक स्रोत, (ii) पुरातात्त्विक स्रोत और (iii) विदेशी यात्रियों के विवरण।

साहित्यिक स्रोत

- विशाखदत्त के नाटक 'देवीचंद्रगुप्तम्' से गुप्त शासक रामगुप्त एवं चंद्रगुप्त द्वितीय के बारे में जानकारी मिलती है।
- इसके अलावा कालिदास की रचनाएँ (ऋतुसंहार, कुमारसंभवम्, मेघदूत, मालविकाग्निमित्रम्, अभिज्ञान शाकुंतलम्) तथा शूद्रक कृत 'मृच्छकटिकम्' और वात्स्यायन कृत 'कामसूत्र' से भी गुप्त काल की जानकारी मिलती है।

पुरातात्त्विक स्रोत

- पुरातात्त्विक स्रोत में अभिलेखों, सिक्कों तथा स्मारकों से गुप्त राजवंश के इतिहास का ज्ञान होता है।
- समुद्रगुप्त के '**प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख**' से उसके बारे में जानकारी मिलती है।
- स्कंदगुप्त के 'भीतरी स्तंभलेख' से हूण आक्रमण के बारे में जानकारी मिलती है, जबकि स्कंदगुप्त के 'जूनागढ़ अभिलेख' से इस बात की जानकारी प्राप्त होती है कि उसने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण करवाया था।
- गुप्तकालीन राजाओं के सोने, चांदी तथा तांबे के सिक्के प्राप्त हुए हैं। इस काल में सोने के सिक्कों को 'दीनार', चांदी के सिक्कों को 'रूपक' अथवा 'रूप्यक' तथा तांबे के सिक्कों को 'माषक' कहा जाता था।
- गुप्तकालीन स्वर्ण सिक्कों का सबसे बड़ा ढेर राजस्थान प्रांत के 'बयाना' से प्राप्त हुआ है।
- मंदिरों में तिगवा का विष्णु मंदिर (जबलपुर, मध्य प्रदेश), भूमरा का शिव मंदिर (सतना, मध्य प्रदेश), नचना कुठारा का पार्वती मंदिर (पन्ना, मध्य प्रदेश), भीतरगाँव का मंदिर (कानपुर, उत्तर प्रदेश), देवगढ़ का दशावतार मंदिर (झाँसी, उत्तर प्रदेश) आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।
- गुप्तकालीन स्मारकों, जैसे-मंदिर, मूर्तियाँ, चैत्यगृह आदि से तत्कालीन कला और स्थापत्य की जानकारी मिलती है।
- अजंता एवं बाघ की गुफाओं के कुछ चित्र भी गुप्तकालीन माने जाते हैं।

अध्याय
11

गुप्तोत्तर काल (Post-Gupta Age)

गुप्त वंश के पतन के बाद भारतीय प्रायद्वीप के राजनीतिक इतिहास में नवीन प्रवृत्ति का आविर्भाव हुआ। इस प्रवृत्ति में विकेंद्रीकरण और क्षेत्रीयता की भावना का प्रादुर्भाव था। 550 ई. के लगभग गुप्त साम्राज्य के विखंडित होने के साथ ही कई सामंतों एवं शासकों ने अपनी स्वतंत्रता घोषित करते हुए नवीन राजवंशों की स्थापना की।

11.1 प्रमुख राजवंश *(Major Dynasty)*

गुप्तोत्तर काल की एक अन्य महत्त्वपूर्ण गतिविधि भारत में इस्लाम धर्म का प्रवेश था, जो अरबों के माध्यम से हुआ। हर्षवर्धन के रूप में सशक्त शक्ति का उदय होने तक उत्तरी तथा पश्चिमी भारत की राजनीति में अनेक छोटे-छोटे राजवंशों का उदय हुआ।

प्रमुख राजवंश

- वल्लभी का मैत्रक वंश
- मालवा का यशोधर्मन
- पंजाब के हूण
- मगध और मालवा के उत्तरगुप्त
- कन्नौज का मौखरि वंश
- थानेश्वर का पुष्यभूति (वर्धन) वंश

वल्लभी का मैत्रक वंश *(Maitraka dynasty of Vallabhi)*

मैत्रक वंश का उदय गुजरात के वल्लभी में हुआ। इस वंश की स्थापना भट्टार्क नामक गुप्तकालीन सैनिक अधिकारी के द्वारा की गई। इस वंश के शासक बौद्ध धर्म में आस्था रखते थे। भट्टार्क के उत्तराधिकारियों ने सौराष्ट्र (काठियावाड़) में शक्तिशाली राज्य स्थापित किया। भट्टार्क के उत्तराधिकारियों में धरसेन, द्रोणसिंह और ध्रुवसेन प्रमुख शासक थे। इस वंश के शासकों ने अपनी **राजधानी वल्लभी** को बनाया, **ध्रुवसेन द्वितीय** इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था। यह हर्षवर्धन का समकालीन था। हर्ष ने अपनी पुत्री का विवाह ध्रुवसेन द्वितीय से कर मैत्रकों से संबंध स्थापित किये। ध्रुवसेन के काल में वल्लभी शिक्षा तथा व्यापार-वाणिज्य का प्रमुख केंद्र था। इसी समय चीनी यात्री ह्वेनसांग ने **वल्लभी की यात्रा** की थी। मैत्रक वंश का अंतिम शासक शिलादित्य था।

वल्लभी विश्वविद्यालय

इतिहास का अवलोकन करने के उपरांत भारत का सबसे पुराना विश्वविद्यालय तक्षशिला तथा सबसे विख्यात विश्वविद्यालय नालंदा को माना जाता है, परंतु वल्लभी विश्वविद्यालय की अपनी अलग पहचान थी। ऐसा कहा जाता है कि यहाँ के विद्यार्थी प्रशासनिक पदों पर सबसे अधिक नियुक्त होते थे। चीनी यात्री इत्सिंग सातवीं शताब्दी में वल्लभी आया तथा इस शिक्षा केंद्र की प्रशंसा की। यहाँ के आचार्यों में 'गणभूति' और 'स्थिरमति' का नाम उल्लेखनीय है।

मालवा का यशोधर्मन *(Yashodharman of Malwa)*

मालवा के यशोधर्मन राज्य का उदय छठी शताब्दी के आरंभिक काल में हुआ। यशोधर्मन की उपलब्धियों का वर्णन हमें मंदसौर के दो अभिलेखों से प्राप्त होता है। मंदसौर प्रशस्ति यशोधर्मन का चित्रण उत्तर भारत के चक्रवर्ती शासक के रूप में करती है। यशोधर्मन द्वारा हूणों की पराजय उसकी महानतम उपलब्धियों में से एक थी। यशोधर्मन का राज्य पूर्व में लौहित्य (ब्रह्मपुत्र नदी) से लेकर पश्चिम में समुद्र पर्वत तक विस्तृत था। मंदसौर प्रशस्ति में उसे 'जनेंद्र' कहा गया।

यशोधर्मन का दूसरा नाम विष्णुवर्धन था। उसने राजाधिराज, परमेश्वर और नराधिपति की उपाधि धारण की थी। **वह शिवभक्त था।** अभिलेखों में उसके अच्छे शासन और सद्गुणों के कई उल्लेख हैं। उसकी तुलना मनु, भरत, अलर्क और मांधाता से की गई है। यशोधर्मन ने अपने शिलालेखों में अपने को औलिकरवंशी तथा सूर्यवंशी इक्ष्वाकु का वंशज कहा है। यशोधर्मन के

अध्याय
12

संगम काल (Sangam Age)

ऐतिहासिक काल के आरंभ में तमिलों के संबंध में जो कुछ जानकारी प्राप्त होती है, उसका स्रोत संगम साहित्य है। 'संगम' से तात्पर्य है **'कवियों का सम्मेलन'** जो संभवतः किसी सामंत या राजा के आश्रय में आयोजित होता था। ऐसे सम्मेलन में रचित साहित्य **संगम साहित्य** के नाम से जाना जाता है। ज्ञात स्रोतों के अनुसार **पांड्य शासकों** के अधीन तमिल क्षेत्र में **तीन संगमों** का आयोजन किया गया।

संगम	अध्यक्ष	संरक्षक	स्थल
प्रथम	अगस्त्य ऋषि	पांड्य शासक	मदुरै
द्वितीय	तोलकाप्पियर (संस्थापक अध्यक्ष अगस्त्य ऋषि)	पांड्य शासक	कपाट्पुरम
तृतीय	नक्कीरर	पांड्य शासक	उत्तरी मदुरै

प्रथम संगम **मदुरै** नामक स्थान पर आयोजित हुआ जिसकी अध्यक्षता **अगस्त्य ऋषि** ने की थी। अगस्त्य ऋषि को ही **दक्षिण भारत** में **आर्य संस्कृति के प्रसार** का श्रेय दिया जाता है। इस संगम के सदस्यों की संख्या 549 थी। इन्हें 89 पांड्य शासकों का संरक्षण मिला। प्रथम संगम की कोई रचना उपलब्ध नहीं है। यह संगम सबसे अधिक दिनों तक चला। द्वितीय संगम का आयोजन **कपाट्पुरम** नामक स्थान पर हुआ था जिसके अध्यक्ष प्रारंभ में **अगस्त्य ऋषि** थे, परंतु बाद में उनका स्थान उनके शिष्य **तोलकाप्पियर** ने ले लिया। इस संगम में कुल 49 सदस्य थे। इसे 59 पांड्य शासकों का संरक्षण मिला। इसमें भी अनेक ग्रंथों की रचना हुई, किंतु तोलकाप्पियर द्वारा रचित तोलकाप्पियम को छोड़कर शेष सारी रचनाएँ नष्ट हो गईं। उसी प्रकार तृतीय संगम का आयोजन **उत्तरी मदुरै** में हुआ। इसकी **अध्यक्षता नक्कीरर** ने की थी। इसमें 49 सदस्य थे। इन्हें 49 पांड्य राजाओं का संरक्षण मिला तथा कुल 449 कवियों को उनकी रचनाओं के प्रकाशन की अनुमति मिली। ईसा की आठवीं सदी में लिखी गई संगम की तमिल टीकाओं में कहा गया है कि तीनों संगम 9,990 वर्षों तक चलते रहे। उनमें 8,598 कवियों ने भाग लिया और 197 पांड्य राजा उनके संपोषक हुए। प्रथम संगम 4,400 वर्षों तक, द्वितीय संगम 3,700 वर्षों तक एवं तृतीय संगम लगभग 1,850 वर्षों तक चला। इन्हें अतिरंजना मात्र माना गया है, सिर्फ इतना ही कहा जा सकता है कि मदुरै में संगम राजाश्रय में आयोजित होते थे। इन सम्मेलनों द्वारा रचित संगम साहित्य जो उपलब्ध है, लगभग 300 ई. और 600 ई. के बीच संकलित किया गया।

12.1 संगम साहित्य *(Sangam Literature)*

अन्वेषण करने पर ज्ञात होता है कि संगम साहित्य का विकास लगभग एक सहस्राब्दी के लंबे काल में हुआ तथा यह क्रमिक रूप में विकसित होता रहा।

संगम साहित्य को मोटे तौर पर दो समूहों में बाँटा जा सकता है- **आख्यानात्मक** और **उपदेशात्मक**। आख्यानात्मक ग्रंथ **'मेलकणक्कु'** अठारह मुख्य ग्रंथ कहलाते हैं। इसके अंतर्गत आठ पद्य संकलन और दस ग्राम्य गीत शामिल हैं। यह साहित्य दक्षिण भारत के परिवेश में ही विकसित हुआ किंतु इस पर उत्तर भारत का भी प्रभाव माना जा सकता है। यद्यपि उत्तर का सीमित प्रभाव है। उदाहरण के लिये, वर्ण-व्यवस्था की चर्चा एवं आठ प्रकार के विवाहों का उल्लेख आदि पर उत्तर भारत का प्रभाव रेखांकित किया जा सकता है।

पुस्तक एवं लेखक	
पुस्तक	**लेखक**
शिल्पादिकारम्	इलांगोआदिगल
मणिमेखलै	सीतलैसत्तनार
जीवकचिंतामणि	तिरुतक्कदेवर
तिरुमुरुकात्रुप्पदै	नक्कीरर

अध्याय
13

दक्षिण भारत (South India)

प्राचीन भारतीय इतिहास में गुप्तकाल के पतन के बाद राजनीतिक गतिविधियों के केंद्र में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। एक ओर मगध जो अभी तक राजनीति का प्रमुख केंद्र था, अब उसकी महत्ता समाप्त हो गई, वहीं दूसरी ओर आगामी 200 वर्षों तक संपूर्ण उत्तरी भारत अस्थिर रहा। यद्यपि हर्ष ने कुछ समय तक स्थिरता प्रदान करने का प्रयास किया था, परंतु लगभग 550-750 ई. के काल में राजनीति का केंद्र दक्षिण भारत हो गया, जो दो मुख्य राजवंशों चालुक्य एवं पल्लव का प्रमुख संघर्ष स्थल था।

13.1 चालुक्य वंश *(Chalukya Dynasty)*

चालुक्य वंश प्राचीन दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध क्षत्रिय राजवंश था। इस वंश ने 750 ई. तक (लगभग 200 वर्षों तक) दक्षिण भारत के इतिहास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। चालुक्य सातवीं सदी में अपने महत्तम विस्तार के समय में वर्तमान समय के पश्चिमी महाराष्ट्र, दक्षिणी मध्य प्रदेश, तटीय दक्षिणी गुजरात तथा पश्चिमी आंध्र प्रदेश में फैला हुआ था। चालुक्य लोग स्वयं को **ब्रह्मा, मनु या चंद्र के वंशज मानते थे।** अपनी वैधता व प्रतिष्ठा को अर्जित करने के लिये उन्होंने अपने पूर्वजों को अयोध्या का पूर्व शासक भी घोषित किया। आगे चलकर ये चार प्रमुख शाखाओं में बँट गए जिनमें बादामी (वातापी) के चालुक्य, कल्याणी के चालुक्य (पश्चिम), वेंगी के चालुक्य तथा अन्हिलवाड़ा (लाट) के सोलंकी चालुक्य शामिल थे।

चालुक्यों की उत्पत्ति के संदर्भ में विवाद है। ऐसा माना जाता है कि वे प्रारंभ में कदंब राजाओं की अधीनता में कार्य करते थे। चालुक्यों की मूल शाखा बादामी या वातापी के शासकों ने छठी से आठवीं शताब्दी के मध्य शासन किया, तत्पश्चात् वेंगी व कल्याणी के चालुक्य प्रमुख शक्ति के रूप में उभरे। चालुक्य वंश के संस्थापक वैसे तो जयसिंह थे, परंतु वास्तविक **संस्थापक पुलकेशिन प्रथम** को माना जाता है। इस वंश का **सबसे शक्तिशाली शासक पुलकेशिन द्वितीय** था। अपने समकालीन पल्लव शासकों से संघर्ष के कारण चालुक्य शासकों की शक्ति क्षीण होने लगी और इनके सामंत शक्तिशाली बनने लगे। ऐसे ही एक सामंत **दंतिदुर्ग** ने वातापी के **चालुक्यों** के **शासन** को **समाप्त कर राष्ट्रकूट राजवंश की नींव डाली।**

सामान्य परिचय (General introduction)

वास्तविक संस्थापक : पुलकेशिन प्रथम (550 – 567 A.D)
प्रारंभिक राजधानी: बादामी या वातापी वर्तमान बीजापुर (कर्नाटक)
सबसे शक्तिशाली शासक: पुलकेशिन-द्वितीय

पुलकेशिन द्वितीय (Pulakeshin-II)

- इसने 609 ईस्वी से 642 ई. तक शासन किया।
- उत्तरी कोंकण के मौर्य शासकों, मैसूर के गंग व वेंगी के पल्लवों को पराजित किया।
- कदंब, चोल, केरल, लाट, मालवा व गुर्जर प्रदेशों को जीतकर उत्तर में माही नदी तक अपने राज्य का विस्तार किया।
- नर्मदा तट पर हर्ष को पराजित कर **'परमेश्वर'** की उपाधि धारण की।
- उसने पर्सिया के शासक खुसरो द्वितीय के दरबार में एक दूतमंडल भी भेजा था।
- पुलकेशिन के बाद उसका पुत्र विक्रमादित्य प्रथम शासक बना।
- इससे संबंधित जानकारी ऐहोल अभिलेख से मिलती है।

चालुक्यकालीन राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक स्थिति *(Political, Economic and Social Status of Chalukyan)*

राजनीतिक और प्रशासनिक स्थिति (Political and administrative status)

वातापी या बादामी के चालुक्यों ने लगभग दो शताब्दियों तक दक्षिण भारत पर शासन किया। वे मूलत: धर्मनिष्ठ हिंदू थे और उन्होंने धर्मशास्त्रों के अनुसार शासन किया। प्राचीन शास्त्रों में विहित राजतंत्र प्रणाली इस काल में भी सर्वप्रचलित

अध्याय
14

पूर्व-मध्यकालीन भारत (Pre–Medieval India)

भारतीय इतिहास में काल विभाजन एक बहुत बड़ी समस्या रही है। सामान्यत: 8वीं से 11वीं शताब्दी के काल को पूर्व मध्यकाल की संज्ञा दी जाती है। राजनीतिक विकेंद्रीकरण, छोटे-छोटे राज्यों का उदय एवं उनमें आपसी संघर्षरत होना जहाँ इस काल की राजनीतिक स्थिति को दर्शाता है, वहीं बंद अर्थव्यवस्था, सामंती सामाजिक जीवन, धर्म में विविधता इस काल की प्रमुख आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक विशेषता थी।

14.1 पाल, गुर्जर-प्रतिहार एवं राष्ट्रकूट वंश *(Pala, Gurjar - Pratihar and Rashtrakut Dynasty)*

आठवीं से दसवीं शताब्दी तक का समय भारतीय इतिहास में राजसत्ताओं के त्वरित उत्थान-पतन का काल रहा। इस समय उत्तर भारत और दक्कन में कई शक्तिशाली साम्राज्यों का उदय हुआ। छठी शताब्दी के अंतिम चरण में गुप्त साम्राज्य के पतन के साथ ही इतिहास के एक महान युग का अंत हो गया। इसके साथ ही 1000 वर्षों से राजनीति का केंद्र रहे मगध का महत्त्व भी हमेशा के लिये समाप्त हो गया। संक्रमण के इस काल में उत्तर भारत में कन्नौज राजनीति के आकर्षण का नया केंद्र बनकर उभरा। सातवीं सदी में हर्ष के राज्यारोहण के बाद कन्नौज की सत्ता अपने चरम उत्कर्ष पर थी। हर्ष के शासनकाल तक उत्तर भारत की राजनीतिक सत्ता अक्षुण्ण बनी रही, परंतु 647 ई. में हर्ष की मृत्यु के साथ ही उत्तर भारत में राजनीतिक अराजकता पैदा हो गई। इसी पृष्ठभूमि में नए राजवंशों व राज्यों को उदय होने का अवसर मिला।

कन्नौज पर आधिपत्य को लेकर तीन गुटों में कई वर्षों तक संघर्ष चलता रहा। ये तीन गुट थे- पाल, गुर्जर-प्रतिहार तथा राष्ट्रकूट। इनमें से पाल साम्राज्य का नवीं सदी के मध्य तक पूर्वी बंगाल में बोलबाला रहा। पश्चिमी भारत और ऊपरी गंगा की घाटी में दसवीं सदी तक प्रतिहार साम्राज्य की तूती बोलती थी। उधर दक्कन में राष्ट्रकूटों का वर्चस्व था, जो समय-समय पर उत्तर और दक्षिण भारत के प्रदेशों पर भी अपना नियंत्रण स्थापित कर लेते थे। यद्यपि इन तीनों साम्राज्यों के बीच संघर्ष चलता रहा, तथापि इनमें से प्रत्येक ने काफी बड़े-बड़े क्षेत्रों को स्थिरतापूर्ण जीवन की परिस्थितियाँ प्रदान की और साहित्य तथा कला को संरक्षण दिया। तीनों में सबसे दीर्घायु राष्ट्रकूट साम्राज्य साबित हुआ। इस साम्राज्य ने न केवल विपुल शक्ति अर्जित की, बल्कि आर्थिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों में उत्तर और दक्षिण के बीच सेतु का काम भी किया। यहाँ हम क्रमश: पाल, गुर्जर-प्रतिहार तथा राष्ट्रकूट राजवंशों के विषय में अध्ययन करेंगे।

पाल वंश *(Pala Dynasty)*

पाल वंश की स्थापना संभवत: 750 ई. के आस-पास बंगाल (गौड़) में हुई थी। **शशांक** की मृत्यु के पश्चात् लगभग एक शताब्दी तक बंगाल में अराजकता और अव्यवस्था का माहौल बना हुआ था। उस क्षेत्र में फैली अराजकता से तंग आकर वहाँ के प्रमुख लोगों ने **गोपाल** को शासक चुना। वह पहला राजा था, जिसका जनता के द्वारा निर्वाचन हुआ। उसने गौड़ में फिर से सुव्यवस्था स्थापित की तथा करीब दो दशकों तक शासन किया। वह बौद्ध धर्म का अनुयायी था तथा उसने ओदंतपुरी महाविहार की स्थापना भी की थी। 770 ई. में उसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र **धर्मपाल** राजा बना।

धर्मपाल ने बंगाल पर 770 से 810 ई. तक शासन किया। उसने सर्वप्रथम राज्य का विस्तार किया। कुछ समय के लिये उसने कन्नौज पर भी अपना अधिकार स्थापित किया था तथा उसने **'उत्तरापथस्वामिन्'** की उपाधि धारण की। वह बौद्ध धर्मानुयायी था, किंतु वह अन्य धर्मों के प्रति भी सहिष्णु था। बिहार और आधुनिक पूर्वी उत्तर प्रदेश पर अपना-अपना नियंत्रण स्थापित करने के लिये पालों और प्रतिहारों के मध्य संघर्ष चलता रहा। यद्यपि बंगाल के साथ-साथ बिहार पर पालों का ही अधिक समय तक नियंत्रण कायम रहा।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी तथा फ्लोचार्ट का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation